कक्षा – आठवीं
विषय – हिन्दी रीडर

पाठ 5 –

प्रश्न – पत्र जैसा संतोष फोन या एस एम एस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?

उ० – पत्रों का अपना अलग महत्व है। पत्रों द्वारा हम अपने मनोभावों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं लेकिन फोन, एस एम एस द्वारा केवल कामू – काजी बातों को संक्षिप्त रूप से व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों को हम संग – संबंधियों की धरोहर के रूप में सहज कर रख सकते हैं। परंतु फोन या एस॰ एम॰ एस॰ को हम सहेज कर नहीं रख सकते हैं। पत्रों से आत्मीयता झलकती है इन्हें अनुसंधान का विषय भी बनाया जा सकता है। ये कई किताबों का आधार हैं।

प्र०२ पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी-पत्र इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइये।

उ० =

खत	–	उर्दू
कागद	–	कन्नड़
उत्तरम्	–	तेलुगु
जाबू	–	तेलुगु
लेख	–	तेलुगु
कडिद	–	तमिल
पाती	–	हिन्दी
चिट्ठी	–	हिन्दी
पत्र	–	संस्कृत।

प्र०३ पत्र-लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उ० – पत्र-लेखन की कला को विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र-लेखन का विषय भी शामिल किया गया। केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य कई देशों में भी प्रयास किए गए। विश्व डाक संघ की ओर से 15 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 से शुरू किया गया।

Scanned with CamScanner

प्र०५= पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एस.एम.एस. क्यों नहीं? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।

उ०= पत्र लिखित रूप में होते हैं। पत्रों को लोग सहेज कर रखते हैं। एस.एम.एस को जल्दी ही भुला दिया जाता है। एस.एम.एस को मोबाइल में सहेज कर रखने की क्षमता ज्यादा समय तक नहीं होती है। परंतु पत्रों के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं होती हैं। हम जितने चाहे उतने पत्रों को धरोहर के रूप में समेट कर रख सकते हैं। दुनिया के तमाम संग्रहालयों में जानी-मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है। पत्र देश, काल, समाज को जानने का असली साधन है।

प्र०६= क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं?

उ०= प्रत्येक वस्तु का अपना अलग महत्व होता है। उसी प्रकार आज तकनीकी की दुनिया में भी चिट्ठियों की जगह कोई नहीं ले सकता है। पत्र-लेखन एक साहित्यिक कला है परंतु फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल जैसे तकनीकी माध्यम केवल काम-काज के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। आज ये आवश्यकताओं में आते हैं। फिर भी ये पत्र का स्थान नहीं ले सकते हैं।

पाठ से आगे :-

प्र०१= किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफाफे पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर कौन-सी कठिनाई आ सकती है? पता कीजिए।

उ०= सही पता न लिखकर पत्र भेजने पर पत्र को पाने वाले व्यक्ति को टिकट की धनराशि जुर्माने के रूप में देनी होगी तभी उसे पत्र दिया जाएगा अन्यथा पत्र वापस चला जाएगा।

प्र०२= पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, कैसे?

उ०= पिन कोड का पूरा रूप है - पोस्टल इंडेक्स नम्बर। यह 6 अंकों का होता है। हर एक का खास स्थानीय अर्थ होता है। जैसे - 1. क्षेत्र 2. उपक्षेत्र 3. संबंधित डाकघर। पहला अंक राज्य क्षेत्र, 3 अंक उप

P.S.C अंक डाकघर का होता है। इसके साथ व्यक्ति का नाम और घर नम्बर आदि भी लिखना पड़ता है। पिन कोड किसी खास क्षेत्र को संबोधित करता है कि यह पत्र किस राज्य के किस क्षेत्र का है। इसके अंको में शहर का संकेत होता है। इसलिए पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है।

प्र०3- ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गाँधी को दुनियाभर से पत्र महात्मा गांधी - इंडिया पता लिखकर आते थे ?

उ०- महात्मा गाँधी अपने समय के लोकप्रिय व्यक्ति थे। वे ज्यादातर देश भ्रमण पर थे इसलिए पत्र लिखने वाला इंडिया लिखकर पत्र भेजते था। गाँधीजी देश के किस भाग में रह रहे हैं, यह देशवासियों को पता रहता था। इसलिए उनको पत्र अवश्य मिल जाता था।

Scanned with CamScanner